

वि. का. राजवडे.

राजवडे

रायरी ग्रेथीड हिंवाजी-

बखर

डॉ. कौरेस्ट यांनी छापिले  
माझांतराचे शुल्क बुदित



८१८. ९९९

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

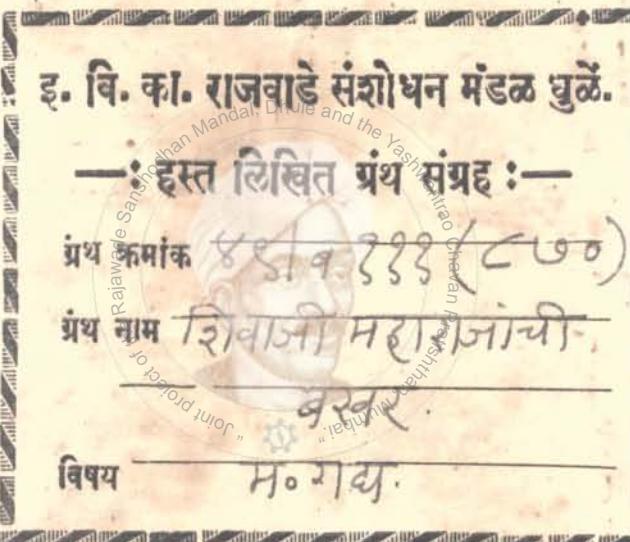
—दस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४४१९.३३३ (८०)

ग्रंथ नाम शिवाजी महाराजांची

वर्तमान

विषय मोर्गाय



१  
वक्ता रेद्य अस्माप्ता विष्णु गति ॥

वक्ता रेद्य अस्माप्ता विष्णु गति ॥

जागृत्वा भूमि यक्षा रीति व्योग्या भूमि व्योग्या

परिमित्या अस्माप्ता विष्णु गति भूमि

इस्त्रीया गुरान्ते इष्ट्या रक्षका ॥

१५  
वक्ता रेद्य अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

चलुन्ते अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

कृते अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

१६  
लिप्ते अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

कर्त्तुत्य अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

टीक्के अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

१७  
विष्णु पुण्या अस्माप्ता विष्णु गति भूमि व्योग्या

नेत्रे रमस्य सेध किति रक्षा विष्णु गति भूमि व्योग्या

१८  
विष्णु रक्षा विष्णु गति भूमि व्योग्या

छप्पानी विष्णु गति भूमि व्योग्या

रक्षा विष्णु गति भूमि व्योग्या

१९  
विष्णु गति भूमि व्योग्या

३

(१) त्रिवर्णनेत्रे देवी विष्णुते नाम  
भृष्टे यम्बाद्वये पारवति विष्णु  
स्वर्णविश्वासी विष्णु पुरुषं  
कृष्ण रथे परिगच्छे उमा विष्णु  
(२) मृग्नि विष्णु द्वया विष्णु विष्णु  
द्वयोऽकलं विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
(३) विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
(४) विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
(५) विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
(६) विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु

Rajawade Sonshodhan Mandal, Dhule and the Yashoda Chavade Pratishthaan Project of the

(3)

रुद्राम्भस्त्रियो विष्णुम् विष्णुम्

स्त्री विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

(3)

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

(3B)

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

(3)

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम् विष्णुम्

Rajawade Sanskrit Research Project  
of the Yashwantrao Chavhan Sanskrit Institute,  
Wardha, Maharashtra.

(h)

कृष्ण उद्देश्यमपि नाम अनुभव

रात्रिरात्रि छल विद्या विद्या विद्या

कृष्ण उद्देश्यमपि नाम अनुभव

W.B. Samsodhan Mandal, Dhule and the  
Kevalrao Chava  
atisma, "Jyoti"  
"Jyoti"

5

4

~~द्वितीय दिन लोग निराकरण के बाहर आये~~

କୋର୍ଦ୍ଦ୍ରାତ୍ମକ ପିଲାଗାମିତାହେଲୀ କାନ୍ତାରିକାରୀ

मात्रामिलाद्वयाद्युपेक्षये वर्ता उल्लिखनः

~~द्वारा निर्मित अवलोकन संस्कृत~~

३४८ विष्णुवाली द्युमिति द्युमिति परम्

४) तपति श्री विजय राम नाम पात्र कपूर नाथ

କରୁଣାମିଳପବନ୍ଧୁ ଯୁଦ୍ଧାମେରାଯା

દુર્ગા મંડળ દ્વારા પ્રેરણ કરાતું હતું અમધેય | દિલ્લી ૧

त्रिवेदीयस्याप्तप्राप्तमार्गमान्द

प्रभु द्वारा अनुरूप भवति ॥

~~Member of the American Legion Auxiliary~~

କାନ୍ତିରାଜପାତ୍ରରେ କାନ୍ତିରାଜରେ

ਦੀਜਿਆਲੇ ਪਾਸੋਂ ਆਪਣੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਰਹਿ

ସମ୍ବନ୍ଧରେ ପରିଚୟ ଦିଲ୍ଲିତା କାହାରେ

ରାଜ୍ୟକାଳରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ବ୍ୟାକରିତା କାଳେ ତିରଦିନଙ୍କୁ ପୂର୍ବତରସ୍ଥା

पौष्टिकाद्वयोऽस्मात् उत्ते परेद्वयोऽहम् ॥

ଦୟକଲୁହାନ୍ତିରବେଳେ କାହାରେ କାହାରେ

— विद्युत्तम उपदेश पुस्तकालय विद्यालय

६ पुरुषसाधीचरित्याची शिरोपालि  
 अथवेद्विषयाची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 त्याग्निरहस्याची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 त्रितोऽप्यत्मानोऽप्यपुण्डितोऽप्यत्मानोऽप्यत्मानो  
 ७ पुरुषोऽप्यत्मानोऽप्यत्मानोऽप्यत्मानो  
 एतद्वायुभृत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 योगिद्विषयाची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 हरितिनामाची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 ८ नदीत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 राजेष्वरां विद्युत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 उद्योगेष्वरां विद्युत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 ऋषां विद्युत्यां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 ९ अर्थात्प्रधानां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 अर्थात्प्रधानां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 द्विषयाची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 कृष्णाच्छाक्षरां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 द्विषयाची कल्पना च यदेवाच त्यज्ञमुके  
 १० आवश्यकां विद्युत्यां विद्युत्यां  
 त्रितोऽप्यत्मानोऽप्यत्मानोऽप्यत्मानो



କେତେମନ୍ଦିରଙ୍କରୁ ମହାପରିବାଦିମଧ୍ୟରେ

ମୁଖ୍ୟାନନ୍ଦପାତ୍ରମହାଶ୍ରଦ୍ଧାକୃତି

ॐ नमः शशिर्लभास्तुत्याग्निर्विद्या

၃၈။ ပရိုး အကျိမ်းသွေးတို့၏

અનુભૂતિ કે મજૂરીની વિષયથી પ્રાપ્તિ

દીકરણ વિશ્વાસે કરે તો બન્ધ હોય તાં કાઢે

रातोऽविनेत्रे यज्ञाद्वाष्टविरुद्धात्मकैर्वापि

*महावीर चंद्रमा नवांग अन्तर्राष्ट्रीय बाल संस्कृत उत्सव*

॥ यज्ञा ॥ प्राप्ति ॥ दृष्टि ॥ तो ॥ विष्णु ॥ विष्णु ॥

Digitized by srujanika@gmail.com

~~मित्रान्वयनादेष्व अविद्याविद्याप्येषो~~

ଦୁଇ ଦୁଇ ଦୁଇ ଦୁଇ ଦୁଇ ଦୁଇ

~~पूर्वानुसारी अवाक्योऽप्यनिषेद्यम्~~

~~Dear Father~~ I am sorry to say that I have not had time to write to you.

~~କରୁଣାମୁଦ୍ରା~~

४३०८३ विना वा वा

१०  
दाद्वीयसमिक्षार्थकेरानकेविवरण।

नेत्रेभवद्वामेपागोद्धीप्तेश्चक्षुर्द्वारा

दृष्टव्यतीव्याप्तिसाक्षिण्याद्वारा

ब्रह्मित्यगिताद्वीताक्षिण्यक्षम्याद्वारा

दृष्टव्यतीव्याप्तिसाक्षिण्याद्वारा

दृष्टव्यतीव्याप्तिसाक्षिण्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

दृष्टव्यतीव्याप्तिसाक्षिण्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

दृष्टव्यतीव्याप्तिसाक्षिण्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

परिवाप्तवेष्टित्याद्वारा

The Rajawadi Anshodhan Mandal Project & The Kashwantrao Pethan Panthi, Mumbai

99

10

92

11

(१२)

काले रथ द्वा नृजीत इव विष्णु देहो द्य

देव पवित्राचार्य एव रथ द्वा तप त्यज्य

स्त्रीमध्यरात्रया नृजीत इव विष्णु देहो

शुभ्राधिपापी एव विष्णु देहो द्य

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

काले रथ द्वा तप त्यज्य नृजीत इव विष्णु देहो

The Rajawadi Sanshodhan  
Joint Project of  
Dhule & Yashwantrao Chavhan  
Shishupan, Mirzapur

۹۸

(13)

स्वरूप छान्दो अन्ने प्रत्येक आपा

का भूमि लेते रहे तथा अनुदान के लिए रखे हैं।

अन्न बाजारी रहे तथा अनुदान के लिए रखे हैं।

वृषभ अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

जल संग्रहीत करने का लिए रखे हैं।

रुद्र अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

पाठ्य गाड़ी का लिए रखे हैं।

शम्भु अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

बहु अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

रुद्र अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

द्विष्ट अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

सुर अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

द्विष्ट अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

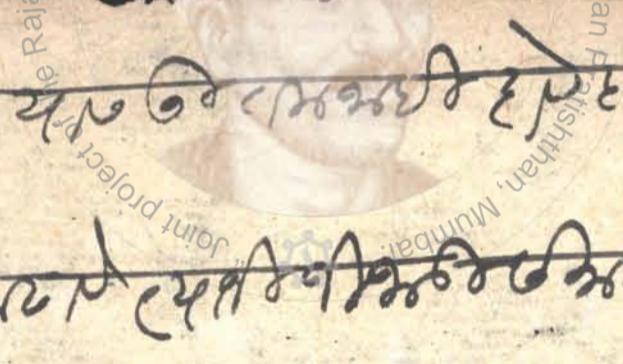
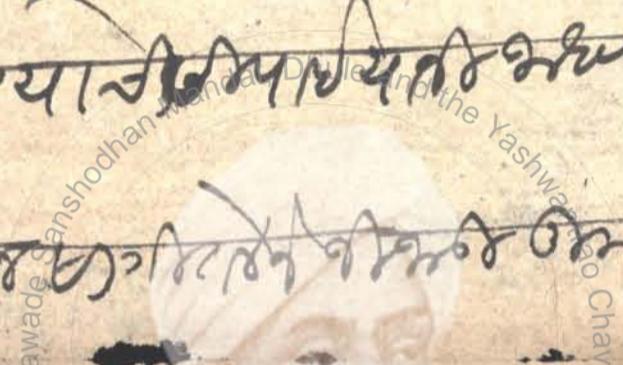
पश्चिमी अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

सुर अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

द्विष्ट अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

वर्षा अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।

वर्षा अपनी गाड़ी का लिए रखे हैं।



(15)

क्षयेति अपासो पार्वती क्षेपुष्टिराजा

स्त्रेश्वरं अभ्युदति च गते पवित्राणां

मुक्तमीन्द्रियां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

तीर्थां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

चम्पां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

पर्वते वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

शीर्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

अग्नां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

द्युम्नां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

महितां वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

द्वितीये वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

तृतीये वृक्षां वृक्षां वृक्षां वृक्षां

१५

विनोदस्तीतामुद्योगप्रवर्त्तनम्

कुमाराउम्भासु लक्ष्मणम्

पद्मिनी विजयम् विजयम्

द्युष्मनम् चेष्टनम् द्युष्मनम्

कुमारावती विजयम्

The Rajawale Sanskriti Mandal, Dhule and the  
Chwantrao Chavhan Pratishthan, Mumbai.  
Joint Project

कर्तव्यादेव विनाशका विषय

देवतानां विषय अनुभव कर्तव्य

प्राप्ति विषय अनुभव कर्तव्य

देवतानां विषय अनुभव कर्तव्य

"Joint Project  
of the Rajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the  
Shantivanta Savan Prajatantra, Mumbai"

१८०  
रुपाली भाई रामा तो रामा  
द्वारा कान्हौड़ी का छाते हैं उन्होंने  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
के बारे में सुना हाते रामा  
१८१  
पहले छाते हैं अजगर की तरफ  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
के अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८२  
करीभी भाई रामा अरु उन्होंने  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८३  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८४  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८५  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८६  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८७  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी  
१८८  
कान्हौड़ी का उत्तरांश तो कान्हौड़ी  
का अवधारणा तो कान्हौड़ी



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)